हिन्दू–मुस्लिम एकता के सुत्रधारः तिलक एवं जिन्ना

*डॉ. हंसकुमार शर्मा

शोध सारांश

भारतीय राजनीति में भारत–पाक रिश्ते बंगाल–विभाजन से 1947, 1985, 1971 के युद्ध व धर्मनिरपेक्षता के नाम पर, राजनीति में अल्पसंख्यकों से मतदान व सत्ता पाने के अतिरिक्त वो अंधी सुरंग बना दी जिसमें कोई हल्की सी रोशनी नही दिखा रहा जिससे उम्मीद व आशावादी रह सके कि कभी न कभी तो हालत जरूर सुधरेंगें।

भारत को बहुलतावादी और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र से 'हिन्दू राष्ट्र' में बदलने की व्यवस्थित कोशिश जारी हे। ऐसे वक्त में हमें स्वतंत्रता संग्राम के अपने प्रबुद्ध नेताओं की विरासत पर गौर करना चाहिऐ जिन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता और भारत–पाकिस्तान की दोस्ती की कोई नई राह तलाश की जा सके।

भारत स्वतन्त्रता संग्राम को जिन नेताओं ने दिशा दी उनमें से एक मुख्य दूरदृष्टि संपन्न लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक (1856–1920) उस वक्त भारत के राजनीतिक माहौल में तिलक का जो कद था उसे देखकर (1917–1922) तक देश में ब्रिटिश सेकेट्री ऑफ स्टेट फॉर इण्डिया रहे, सैमुएल मोटेंग्यू ने कहा था, ''इस वक्त भारत में शायद तिलक से ज्यादा ताकतवर कोई दूसरा शख्स नहीं है।''

1 अगस्त, 1920 में तिलक का बाम्बे (मुम्बई) में आकस्मिक निधन हो गया। उस वक्त उनकी उम्र 64 वर्ष थी, अन्तिम संस्कार में दस लाख से अधिक लोग शव यात्रा में थे। शोकाकूल महात्मा गॉधी ने यंग इण्डिया में लिखा है, ''एक विशाल व्यक्तित्व, एक शेर की आवाज शांत हो गई। तिलक ने जिस तन्मयता और आग्रह से स्वराज की अविरल गाथा सुनाई वैसा कोई नहीं कर पाया।''

तिलक के बेहद नजदीकी सहयोगी रहे मोहम्मद अली जिन्ना ने हार्दिक श्रृद्धान्जली देते हुऐ कहा था, श्री तिलक ने एक सैनिक की तरह देश की सेवा की और हिन्दू–मुस्लिम एकता को बनाये रखने में अहम भूमिका अदा की, उन्हीं की वजह से 1916 में लखनऊ समझौते को जमीन पर उतार पाना संभव हुआ।''

भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में दो घटनाऐं हिन्दू–मुस्लिम एकता के मील का पत्थर कहीं जाती है जिसमें एकता व समन्वय अपने शिखर पर पहुॅच गई थी। प्रथम 1857 की आजादी की लडाई जिसमें पेशावर से ढाका तक लालची ब्रिटिश शासन के विरूद्ध कंधे से कन्धा हिन्दू–मुस्लिम ने मिलकर संघर्ष लडे थे।

द्वितीय लखनऊ में कांग्रेस ओर मुस्लिम लींग का समझौता जो 1916 में ओर उसके मुख्य वास्तुकार थे तिलक व जिन्ना। अगर समझौते की यह भावना बरकरार रहती तो शायद स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास कुछ अलग और बेहत्तर प्रभावशाली होता।

दो घटनाऐं जिन्होंने तिलक को जन नायक बनायाः–

1897 में प्रथम बार जिसमें डेड साल जेल रहे द्वितीय 1908 में जिसमें 6 साल की सश्रम कारावास एवं बर्मा की मांडले जेल भेज दिया गया। जिसमें देश के कामगार वर्ग द्वारा बाम्बे हडताल की गई सभी जाति एवं मुस्लिमों ने 6 दिन के लिए ठप्प कर दिया, एक साल के लिए 1 दिन, 06 साल के लिए 6 दिन, जब तीसरी बार 1916 में राजद्राह का मामला चला तो युवा वकील ओर भारतीय राजनीति के उभरते मोहम्मद अली जिन्ना ने उनका सफलतापूर्वक बचाव किया।

बाम्बे हाईकोर्ट में शेर की तरह गरजते हुए तिलक ने ऐलान किया, ''स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।''

तिलक की सजा की आलोचना करते हुऐ 1917 की रूस क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले बतादीमिर लेनिन ने कहा, "ब्रिटिश भेडियों ने भारतीय लोकतांत्रिक नेता तिलक को जो सजा सुनाई है वह यह दिखाया है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का अन्त होने ही वाला है।"

मौलाना हसरत मौहाली प्रख्यात स्वतन्त्रता सेनानी एवं उर्दू के शायर जिन्होंने 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा पहली बार दिया था तिलक को अपना मेंटर व गुरू मानते थे उन्होने तिलक पर एक गजल भी लिखी थी।

इतिहास मुस्लिम विरोधी लिखते रहे हैं जबकि थे नहीं– कुछ 'हिन्दू राष्ट्रवादी' ओर कुछ 'मुस्लिम विरोधी' के तौर पर क्योंकि गणेश ओर शिवाजी उत्सवों का आयोजन ''हिन्दू पुनरूत्थान'' को बढाने की कोशिश की वे आम नागरिक को स्वतन्त्रता आन्दोलन से जोडने हेतु ऐसा किया था।

वे उक्त बिन्दूओं को नजर अंदाज कर जाते है कि पर्व में मुस्लिम भाईयों के साथ मोहर्रम के जुलूस में भी शामिल होते थे। उन्होने सदैव इस बात पर जोर दिया कि भारतीय राष्ट्रवाद "साझा" है। जिसमें हिन्दू–मुस्लिम दोनों के लिए समान व बराबर की जगह हैं, वे सदैव भारत की मुक्ति और कतिपय की तरक्की से हिन्दू और मुस्लिम समुदाय की एकता निहायत जरूरी है। यह हिन्दू और मुस्लिम राष्ट्रवाद ही भारत को 'हिन्दू राष्ट्र' और पाकिस्तान के 'इस्लाम राष्ट्र' बनाने के पैरोकारों के लिए नफरत फैलाने का औजार बन गया। खिलाफत आन्दोलन के प्रमुख नेता मौलाना शौकत अली और उसके भाई मोहम्मद अली जौहर तिलक का सम्मान एवं उनका कहना था कि मैं एक बार नहीं सैकडों बार यह कहता हूँ हम दोनों भाईयों का नाता अब भी तिलक की राजनीति पार्टी से है।'

जब अन्तिम संस्कार के बाद तिलक जी की अस्थिया विशेष ट्रैन से पैतृक शहर पूणे लाई गई जब एक मस्जिद के सामने रूका तो लोगों ने श्रद्धान्जली देते हुऐ नारे लगाये, 'हिन्दू मुस्लिम एकता की जय'

हिन्दू मुस्लिम एकता के समर्थक जिन्नाः–

जिन्ना 1896 में कांग्रेस में शामिल हुऐ उन्होंने बाद में 1913 में मुस्लिम लीग की सदस्यता ग्रहण की, जिन्ना खुद को देश की आजादी में साझा लक्ष्य के लिए संघर्ष कर रहे थे दो भारतीय राजनीतिक दलों के बीच पुल के तौर पर देखा, जिन्ना के राजनैतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले जो उदारवादी (तिलक उग्रवादी धडे के नेता थे), राष्ट्रीय मुक्ति के लिए जिन्ना भी हिन्दू मुस्लिम एकता के पेरोकार थे, यह वर्तमान में विश्वसनीय लग सकता है कि आगे चलकर पाकिस्तान की स्थापना करने वाला एक ही सदस्य एक वक्त कांग्रेस और मुस्लिम लीग का सदस्य था, गोखले ने जिन्ना को 'हिन्दू मुस्लिम एकता का दूत' करार दिया जिन्ना ने खुद मुस्लिम गोखले बनने की इच्छा जताई थी यह सही है कि तिलक और जिन्ना ने भी एतिहासिक लखनऊ पेक्ट के वास्तुकार थे एवं वार्षिक

अधिवेशन दिसम्बर 1916 कांग्रेस और मुस्लिम लीग का एक साथ एक समय में होना दोनों पार्टियों ने मुस्लिमों के लिए अलग–अलग प्रतिनिधित्व की व्यवस्था करने के लिए तैयार हुऐ थे। जिनमें उनके प्रतिनिधित्व को पर्याप्त महत्व दिया गया। अल्पसंख्यक होने के बावजूद इंपिरियल और प्रांतीय विधान मण्डल में आबादी के अनुसार मुस्लिमों को ज्यादा प्रतिनिधित्व इसी तरह इस समझौते ने पंजाब और बंगाल में जैसे मुस्लिम राजयों, गैर मुस्लिमों को पर्याप्त सीटें देने के लिए मुस्लिमों की संख्या घटाई गई। इसी समझौते से इंपीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल में मुस्लिमों को एक–तिहाई सीट दी गई।

पं. मदनमोहन मालवीय जैसे प्रभावशाली हिन्दू कांग्रेस नेता ने तिलक का विरोध एवं निर्वाचक मण्डल जैसी राष्ट्र विरोधी और लोकतांत्रिक विरोधी व्यवस्था का समर्थन तिलक ने मुस्लिमों के सामने समर्पण कर दिया लेकिन तिलक दृढ और समझौते के लिए आलोचनाऐं झेली।

तिलक ने कहा 'हमारे मुस्लिम भाईयों को जो भी सीटें मिली है वो पर्याप्त व रियायत दी गई है, उसके अनुरूप उन्होंने बहुत उत्साह और जिन्दा दिली दिखाई है। मुस्लिमों की मदद के बगैर हम मौजूदा असहिष्णु दौर से नहीं निकल सकते है।'

तिलक का मानना था कि ब्रिटिश, हिन्दू, मुस्लिमों के इस त्रिकोणिय संर्घर्ष में हिन्दू मुस्लिमों के साझा मोर्चे के बीच संघर्ष को उस बुनियादी तब्दीली को जमीन पर उतारने के लिए तैयार किया ब्रिटिश लोगों ने क्योंकि दोनों भारतीय है, उक्त प्रशासनिक व्यवस्थाओं में दोनों ही समान विचारधाराओं को सदाशयता को बरतने को तैयार है। जो बुनियादी तैयारियॉ की थी जिन्ना ने तिलक की सोच को वाणी दी । लखनउ के मुस्लिम लींग के अधिवेशन में जिन्ना ने स्वयं कहा 'पक्का कांग्रेसी जिसे साम्प्रदायिक नारों से कोई दबाव नहीं था। जिन्ना को भारत के दो बडे हिस्से समुदायों के बीच एकता में पक्का विश्वास था। उनका मानना था कि हिन्दू–मुस्लिम एकता को साझा हितों के लिए दोनों के बीच सौहार्दपूर्ण माहौल होना चाहिऐ, जो संघर्ष हेतु उपर्युक्त नहीं रहा। तिलक को मुस्लिम लींग के अधिवेशन में आमंत्रण, भव्य स्वागत और अभिनन्दन किया गया। तिलक का इस अवसर पर ऑखों देखा व्यौरा डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी ने दिया जो बाद में कांग्रेस और मुस्लिम लींग दोनों के अध्यक्ष बने।

डॉ. मुख्तार ने कहा था कि "तिलक की दृष्टि हिन्दू वर्चस्व की नहीं बल्कि समन्वय, एकता की थी कुछ लोगों ने तिलक के विचारों को गलत दृष्टिकोण से प्रदर्शित करना चाहते थे कि ये देश में एक होकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष व आजादी हेतु ना लडे।"

तिलक व जिन्ना का समझौते का परिणाम व संभावनाऐंः–

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सबसे बडी त्रासदी उन आने वाली घटनाओं के दौरान हिन्दू–मुस्लिम एकता एवं कांग्रेस–मुस्लिम सहयोग अपनी कसौटी पर खरा सही नहीं हो सका, इसमें तिलक की आकस्मिक मृत्यु एवं कांग्रेस में विभाजन मुख्य कारण है। यदि वे जीवित रहते तो व्यावहारिक सकल दे पाते। दूसरी ओर जिन्ना का कांग्रेस में लगातार हांशियें पर धकेलना 1921 में कांग्रेस पार्टी में इस्तीफा एवं बढते अविश्वास और आपस में नहीं के बराबर असहयोग की वजह से कांग्रेस और मुस्लिम लींग भारत को 1947 के रक्त रंजित विभाजन की ओर ले गई।

भारत और पाकिस्तान के विभाजन पश्चात् कोई भी सदा–संहिता या सकारात्मकता सोच दिलाने को तैयार नहीं रहा विवादास्पद मुद्दों को सुलझाने, समझौता करने को तैयार न करके उन कार्यो हेतु जो स्वतन्त्रता संग्राम में 1857 से 1947 तक रहा उसको महात्मा गॉधी ने 'रामराज्य के रूप में अभिव्यक्त किया, जिसमें प्राचीन आदर्श, सच्चे प्रजातंत्र का आदर्श जिसमें पूर्ण सामाजिक, न्याय, समानता, स्वतंत्रता की स्थिति उन केवल राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक

भावना ने फलीभूत होने का परिचायक नहीं है, यह उन अहंकार पूर्ण हितों से रहित ऐसी सामाजिक व्यवस्था की आकांक्षा करता है जो सामाजिक संघर्षो तथा तनावों का कारण बनते है। अतः रामराज्य को धर्म, अहिंसात्मक, रामराज्य लोगों का अन्तिम लक्ष्य माना जाता है।'

अतः धर्म, जाति, वर्ण, वर्ग के आधार पर व्यक्तिगत लाभांश व सत्ता पद पाने हेतु उक्त सिद्धान्तों में संविधान संशोधन, सामाजिक आधोगिकरण के फैलाने से नही बल्कि व्यक्ति के मुख्य उक्त समस्याओं जिसमें न्याय, नैतिक व बुनियादी शिक्षा, स्वदेशी लघु व कुटीर उधोगों के साथ–साथ व्यक्ति के सामाजिक, संस्कृति, राजनैतिक मूल–भूत आवश्यकताओं व समस्याओं को तात्कालीक व भावी योजनाओं द्वारा व्यक्ति के विकास में चिकित्सा, शिक्षा, न्याय द्वारा समाधान में समय पर निस्तारण करने में तात्कालीक परिणाम व जनसेवक द्वारा जनता की सेवा ही उक्त समस्या का समाधान कर सकते है।

सर्वोदय, सर्वजन सुखाय व सर्वजन हिताय जो वर्तमान में व्यक्ति हेतु आवश्यक है। उक्त समस्या में समाधान द्वारा ही सहायक है।

सारांशतः

जन संघर्ष द्वारा स्वतन्त्रता, स्वदेशी, स्वाभीमान को पाने हेतु स्वतन्त्रता सेनानियों ने जिनमें हिन्दू–मुस्लिम अन्य मत–मतांतरों ने प्रयास किया है उनमें जिन्ना व तिलक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है एवं वर्तमान तक में प्रासंगिक है।

***प्राचार्य**
श्री वीर तेजाजी महाविधालय,
राडावास (जयपुर)

संदर्भ ग्रन्थ

1. वी.जी. भट्ट : लोकमान्य तिलक, इज लाईफ, माइण्ड, पॉलिटिक्स, एण्ड फिलोसोफी, पूना 1956
2. हूमायू, कबीर : मुस्लिम पॉलिटिक्स, 1906–1942, गुप्ता रहमान गुप्ता, कलकत्ता, 1944
3. जी.डी. कनसलः जिन्ना, दॉ जेन्टलमेन, गोयल एण्ड गोयल, जयपुर 1940
4. डा. पुरूषोत्तम नागरः आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989
5. डॉ. जे.सी. जौहरीः भारतीय शासन व राजनीति, विशाल पब्लिकेशन, जालंधर, 1995